राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक चिंतन का साप्ताहिक समाचार पत्र

प्रज्ञा शनि नेशन्स टाइम्स

संस्करणः नई दिल्ली व पाली राज. 27 अक्टूबर 2011 - 02 नवंबर 2011, वर्ष : 8 अंक : 48,
साप्ताहिक, मूल्य : 2 रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्कः 250/-

shaninationstimes@ gmail.com

web : www.shanidham.in
www.facebook.com/ shreeshanidham

दाती संदेश

जन्म-मरण के चक्र से सदा के लिए मुक्त हो जाओ- दाती श्री

मित्रो, विषय-वासनाओं के लोभ में हमें क्या पता कब से विविध योनियों में जनमते-मरते आ रहे हैं। पता नहीं कबतक हम भवसागर में हिचकोले खाते रहेंगे। सबके मूल में हमारी वासनाएं हैं। उन्हीं की पूर्ति के लिए हमारा सारा जीवन बर्बाद हो रहा है। हर प्रकार की मोह-ममता हमारी इच्छाओं की बुनियाद पर ही खड़ी होती है। इनसे छुटकारा पाए बिना हमें बार-बार पहले की भांति जन्म-मरण के चक्र में फंसे रहना पड़ेगा। यही वजह है कि हमारे प्राचीन मनीषियों व साधु संतों ने मोह-ममता की बेड़ियों से छुटकारा पाने के लिए उपदेश दिया है। इसके लिए उन्होंने एक बड़ा ही सरल उपाया बताया है कि गुरु कृपा से वास्तविकता का बोध हासिल कर लो। क्योंकि वास्तविकता का बोध होते ही यह विश्वास दृढ़ हुए बिना न रहेगा कि जितने भी सांसारिक संबंध हैं, स्वार्थ-केंद्रित हैं। जब सर्वशक्तिमान प्रभु की कृपा होती है तभी सद्गुरु मिलते हैं और उनकी अनुकंपा से वास्तविकता का बोध होता है।

प्रभु की कृपा के लिए आध्यात्मिक साधना करनी पड़ती है। इससे आत्मबल मिलता है। इसी से दैवी-दया का बोध होता है। आध्यात्मिक साधना से द्रवीभूत होकर चित्त की वृत्तियों का ईश्वर की ओर प्रवाह ही भक्ति कहलाती है। अत: इसमें सेवा से संबद्ध श्रद्धा, अनुरक्ति, समर्पण आदि सभी भाव आ जाते हैं। इन सभी भावों के मूल में प्रेम किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता है। ऋग्वेद संहिता में कहा गया है कि जैसे गंगा आदि बड़ी नदियां समुद्र की ओर दौड़ती हुई उसमें विलीन हो जाती हैं, वैसे ही भगवद्भक्त के मन की सभी वृतियां परमेश्वर की ओर जाती हुई तदाकार होती हुई उसमें विलीन हो जाती हैं। सभी मनीषियों और साधु-संतों न जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होने के लिए परमात्मा की भक्ति को आवश्यक बताया है। भक्ति दो प्रकार की मानी गई है - वैधी तथा रागानुगा। वैधी भक्ति दुष्कर है, क्योंकि उसमें विधि-विधानों का विशेष महत्व है। ये विधि-विधान दु:साध्य हैं। इसके विपरीत रागानुगा भक्ति सहज, सरल तथा सुलभ है। तुलसी के अनुसार भगवद अर्चना ही भवरोग की महौषधि है। रामनाम के भीतर ब्रह्म, जीव और तीनों लोक हैं। जब जीव और भगवान में अलगाव हुआ तब भगवान ने कहा - तुम हमारे सखा, हम तुम्हारे सखा। जीव ने कहा कि केवल सखा कहने से बात नहीं बनेगी। सब कुछ तो आप ने अपने पास रखा है, कुछ हमें भी तो दो। तब भगवान ने कहा - हमारे पास दो चीजें हैं - एक नाम और दूसरा रूप। रूप हमारे पास रहने दो। इस प्रकार जीव और भगवान में आधा-आधा बंटवारा हो गया। इस पर भी भगवान ने सोचा कि मैं बलवान हूं, जीव निर्बल है, इसलिए इसे थोड़ा और बल देना चाहिए। उन्होंने कहा - लो जीव! मैं अपने रूप को नाम के अधीन कर देता हूं। जब तुम मेरा नाम लेकर पुकारोगे तो मैं आ जाऊंगा। इस प्रकार भगवान तो नाम के अधीन हैं। जब कोई उन्हें पुकारता है तो वे दौड़े चले आते हैं। भगवान के आते ही जन्म-मरण के दुख तत्काल भाग खड़े होते हैं। भगवान तो सदैव स्मरण में ही रमण, अनुगमन तथा पूर्ण चैतन्य भाव से विश्राम करते हैं। प्रभु की भक्ति करते रहने का भाव मन में रखना बहुत उत्तम है। परमात्मा का भक्त बनकर सभी कार्यों को करते रहने से मनुष्य स्वयं को श्रेष्ठता की ओर ले जाता है। इस जगत को परमात्मा का साकार रूप समझकर अपने कार्यों को इस प्रकार करता हुआ अपना जीवन यापन करना चाहिए कि वे प्रभु ही इस जगत के एकमात्र मालिक हैं और मैं उनका एक छोटा सा सेवक हूं। ऐसा विचार मन में जागृत हो कि हरहाल में परमात्मा के आदेशों का पालन करता हुआ अपना जीवन जिया जाए। इस संसार में आकर मनुष्य को अपने आपको मालिक समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए। इसलिए इस जगत की एक-एक वस्तु ईश्वर की बनायी हुई है। वे ही इस प्रकृति की रचना करने वाले हैं। फिर वे ही इस प्रकृति की रचना को क्षण भर में नष्ट कर सकते हैं और पल भर में एक नयी रचना वे पुन: रच सकते हैं। उस सामर्थ्यवान ईश्वर के हाथ में सभी कुछ है। जो लोग इस सत्य को न समझने की भूल करते हैं, स्वयं को सर्वशक्तिमान मानने लगते हैं, वे दण्ड के पात्र बनते हैं। उनकी समझ के अनुसार यह संसार उनकी जागीर है जबकि तथ्य यह है कि परमात्मा ही सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्यवान है। सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्यवान होते हुए भी वह सभी पर दया करता है। वह दया का सागर है, प्रेम का भण्डार है। उससे कोई प्रीति करे न करे, वह सबसे प्रीति करता है, ऐसे प्रभु को सब कुछ सौंपकर मात्र उनका सेवक बन जाना ही श्रेष्ठ है। भगवान तो अपने सेवक पर अति प्रीति रखते हैं। भगवान

शेष पेज 14 पर

व्रत-त्यौहार

29 अक्टूबर से 4 नवंबर 2011 तक
(कार्तिक शुक्ल द्वितीया से नवमी तक)

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	चन्द्र राशि	विशेष
29	शनि	तृतीया	अनुराधा	वृश्चिक	....
30	रवि	चतुर्थी	ज्येष्ठा	धनु	दूर्वा गणपति
31	सोम	पंचमी	मूल	धनु	ज्ञान पंचमी
01	मंगल	षष्ठी	पू. षा.	मकर	सूर्य षष्ठी व्रत
02	बुध	सप्तमी	उ. षा.	मकर	....
03	गुरु	अष्टमी	श्रवण	कुंभ	गोपाष्टमी, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी
04	शुक्र	नवमी	धनिष्ठा	कुंभ	आरोग्य व्रत, जगद् धातृ पूजा

प्रज्ञा की संपूर्ण प्रस्तुति : श्री शनिधाम शिक्षा एवं शोध संस्थान, श्री शनिधाम ट्रस्ट , असोला फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली। फोन : 26653500, 26654400, Web Site : www.shanidham.in E-mail: shaninationstimes@gmail.com

मैं अपनी शादी के बारे में जानना चाहता हूं। कृपया जन्मकुंडली को देखकर विवाह व वैवाहिक जीवन में सफलता और सुख पाने के उपाय भी बताएं?

- चिराग कोठारी, मुंबई

आपका मकर लग्न और मीन राशि है। शुक्र की महादशा 19 फरवरी 2014 तक रहेगी। ग्रह योगायोग संकेत दे रहे हैं। 14 सितंबर 2012 के बाद आपका समय ठीक हैं। वैवाहिक जीवन में सफलता के लिए आपको संशयों से बाहर आना होगा।

. आप सवा सात रत्ती पन्ना सोने में अनामिका अंगुली में बुधवार को धारण करें।

. हर शुक्रवार के दिन श्रद्धानुसार दूध गरीब कन्याओं में बांटें। यदि संभव है तो आप मेरे से व्यक्तिगत मिलें।

आप अपनी समस्याएं हमें सादे कागज पर निम्न जानकारी के साथ लिख कर भेज सकते हैं।

नाम: ....

पता : ....

दूरभाष : ....

जन्म तिथि : ....

जन्म समय : ....

जन्म स्थान : ....

आपका प्रश्न : ....

....

एक पत्र में केवल एक प्रश्न ही लिखें। प्राप्त समस्याओं के उत्तर हम आगामी अंकों में प्रकाशित करेंगे। प्रश्न के साथ एक 5 रु. का टिकट लिखा जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें।

भेजने का पता :

अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष
विकास व अनुसंधान संस्थान

श्री शनि तीर्थ क्षेत्र, श्री शनिधाम, असोला,

फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली-30

फोन : 26653600, 26654400

फैक्स / फोन : 26653500

E-Mail: shanidham@gmail.com

इस पृष्ठ की सभी सामग्री अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान।

वास्तु शास्त्र : परिचय व महत्व

क्रमागत

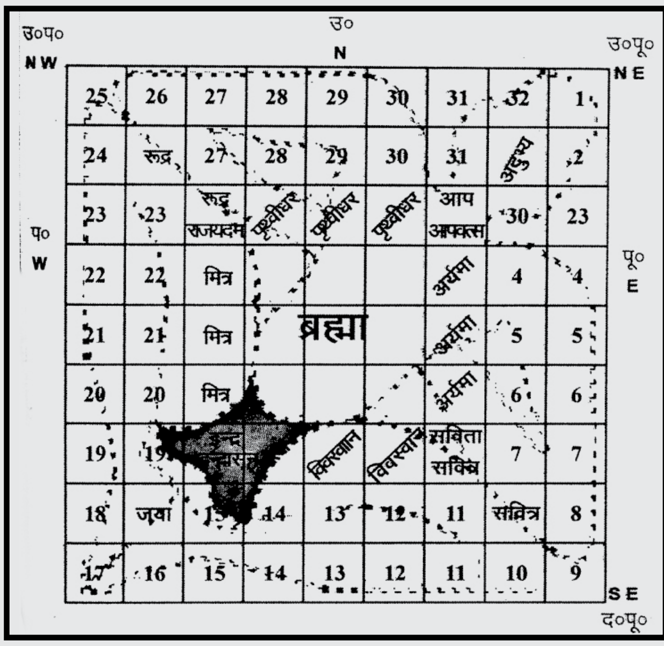

भवन निर्माण जीवन को व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए उत्तम आवास सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। वास्तुविद् अपनी योग्यता और निर्माण कौशल से भवन को ऐसे रूप में बनाता है ताकि उसमें निवास करने वाले गृह स्वामी सुख-शांति एवं आनंद के साथ अपना जीवन यापन कर सकें।

(५) **चक्राकार भूखंड - पहचान** - जो भूखण्ड अष्टकोणात्मक या पहिए जैसा होता है, उसे चक्राकार भूखण्ड (wheel shaped) कहते हैं।
विवेचना - यह भूखण्ड गृहस्थ के लिए अशुभ होने के कारण त्याज्य होता है। इस पर गृह–निर्माण करके रहने वाला गृहसथ निर्धन और परेशान रहता है।

(६) **शकटाकार भूखण्ड** - पहचान बैलगाड़ी के आकार का भूखण्ड शकटाकार भूखण्ड (Bull-Cart-shaped plot) कहलाता है।
विवेचना - यह भूखंड अशुभ एवं त्याज्य होता है। ऐसे भूखंड पर गृह–निर्माण करके उसमें रहने वाला व्यक्ति व्यर्थ भाग–दौड़ करता है। वह व्याधिग्रस्त रहता है एवं उसे अग्निभय एवं आर्थिक तंगी रहती है।

(७) **सूपाकार भूखण्ड** - पहचान – सूप के आकार वाला भूखंड सूपाकार भूखंड कहलाता है।
विवेचना - सूपाकार भूखंड अशुभ एवं त्याज्य होने के कारण भवन निर्माण के योग्य नहीं होता है। ऐसा घर आर्थिक तंगी वाला एवं सुख–सम्पत्ति नष्ट करने वाला होता है।

(८) **धनुषाकार भूखण्ड - पहचान** - यह धनुष के आकार वाला होता है। इसे धनुषाकार भूखंड कहते हैं।
विवेचना - यह भूखंड अशुभ एवं त्यागने योग्य होता है। ऐसे भूखंड पर गृह–निर्माण करना शत्रु भय वृद्धिकारक एवं कष्टदायी होता है।

(६) **तबलाकार व मृदंगाकार भूखंड** – पहचान – यह तबला या मृदंग के आकार का होता है।
विवेचना – तबलाकार भूखंड अशुभ एवं त्याज्य होता है। यह समृद्धि रहित होता है। यह तबले की तरह खाली ही रहता है। मृदंगाकार भूखंड अशुभ एवं स्त्री मृत्यु कारक होता है।

क्रमशः

काल सर्प योग : कारण व निवारण के उपाय

क्रमागत

यदि जातक के निज पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप जन्मकुंडली के तीसरे भाव में केतु हो तो उसको दूसरों से सलाह लेते रहने का अशुभ फल भी मिलता है। इसका बुरा प्रभाव जातक के लिए तो खराब होता ही है, मगर इसके साथ-साथ उसके परिवार, भाइयों तथा ससुराल वालों पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ सकता है। तीसरे भाव में केतु यदि अशुभ होकर बैठा हो तो यह जीवन में कोर्ट-कचहरी की समस्याओं को पैदा करता है। इसके फलस्वरूप ऐसे जातक को अपनी पत्नी से भी दूर रहना पड़ता है। तीसरे भाव में केतु वाला जातक यदि दक्षिण के मुख्य द्वार वाले मकान में निवास करे तो केतु और भी अशुभ होता है जिसके कारण संतान संबंधी परेशानियां पैदा होती हैं।

तीसरे भाव में केतु हो तो जातक की संतान अपने जीवन में साधारण स्तर की ही उन्नति कर पाती है। केतु तीसरे भाव में हो और चंद्र मंगल तीसरे या चौथे भाव में हो तो जातक की आर्थिक स्थितियां बहुत अच्छी नहीं होती। उसे जीवन में पैसे की कमी से तंग रहना पड़ सकता है। यदि चंद्र-मंगल की स्थिति आठवें भाव में हो और जातक दक्षिण दिशा द्वार वाले मकान में जिसके कारण संतान रोग ग्रस्त होकर मर भी सकती है। तीसरे भाव में केतु वाला जातक जीवन में यात्राएं बहुत करता है, मगर उनसे कोई ज्यादा लाभ या सुख नहीं मिल पाता। ऐसे जातकों की हथेली में चित्र में दिखाए गए स्थान पर केतु का निशान होता है।

यदि केतु तीसरे भाव में हो तो जातक वफादार व नेक दिल वाला होता है। वह कभी किसी को धोखा नहीं देता। वह दूसरों का उपकार मानने वाला एक सदाचारी गृहस्थ इन्सान होता है। उसकी ससुराल तथा भाइयों की दशा कितनी ही रंग-बिरंगी क्यों न हो पर उसकी संतान बुरी नहीं होती। चौबीस वर्ष बाद पहली संतान बेटा होने पर उसका भाग्योदय होता है। उसकी आयु रेखा अधिक बलवती होती है।

उपाय

1. दक्षिण दिशा में मुख्य द्वार वाले घर में निवास न करें।

2. बृहस्पति की चीजें (चने की दाल आदि) नदी में बहायें।

3. कानों में शुद्ध सोना पहनना लाभप्रद रहता है।

चौथे भाव में केतु का फल व उपाय

सब्र अपने का फल चाहे मीठा मिलेगा।
मगर बोझ देरी का सहना पड़ेगा।

लाल किताब के अनुसार चौथे भाव में स्थित केतु को 'बच्चों को डराने वाला कुत्ता' कहा है। चौथे भाव में बैठे केतु को बहुत शुभ नहीं कहा गया है। क्योंकि केतु के यहां स्थित होने से न केवल चन्द्रमा कमजोर होता है। बल्कि चन्द्रमा को चन्द्र ग्रहण भी लग जाता है।

जिसके फलस्वरूप जातक माता के सुख में कमी करता है। किन्तु धन के लिए व अपने स्वास्थ्य के लिए उसका प्रभाव अशुभ नहीं होता।

क्रमशः

मानव शरीर की विशिष्ट संरचना

प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार की विधि भी हमारे देश में सदियों से आजमाई जाती रही है। यदि आप प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार का लाभ लेना चाहते हैं तो उसके लिए आपको किसी कुशल मार्गदर्शक की देखरेख में उसकी विधि सीखनी होगी और यह भी जानना होगा कि किस प्रकार के रोगों का शमन करने के लिए किस प्रकार के प्राणयाम का अभ्यास कितनी अवधि तक किया जाता है।

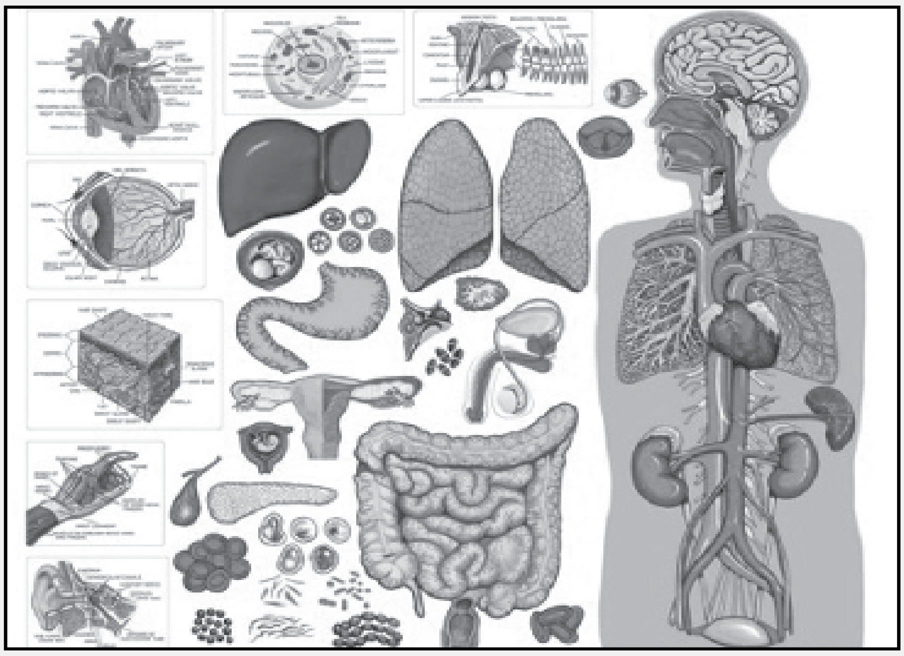

क्रमागत

प्राणायाम का रोगोपचार में उपयोग

हृदय की धड़कन बढ़ने के उपचार हेतु प्राणायाम

अचानक हृदय की धड़कन

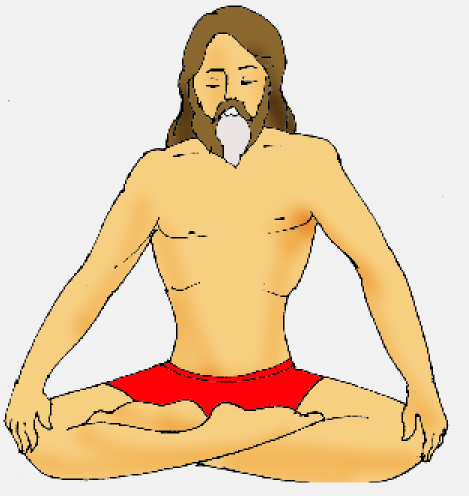

बढ़ जाने की बीमारी पहले कुछ गिने-चुने लोगों को ही हुआ करती थी। अब तो यह बीमारी किसी भी उम्र में किसी भी व्यक्ति को होते हुए देखा जा रहा है। लोगों के दिमाग पर बढ़ते बोझ, मानसिक तनाव और आये दिन वातावरण में घुलते जहर के अनुपात में बेतहाशा वृद्धि से मनुष्य बहुत बेचैन व व्यथित होता जा रहा है। यही वजह है कि पहले की तुलना में मनोरोगियों व हृदय रोगियों की संख्या में भी बेशुमार वृद्धि होती जा रही है। जब मानव हृदय पर लगातार आघात बढ़ते जाते हैं तो स्वाभाविक रूप से उसे हृदय की धड़कन बढ़ाने वाली बीमारी धर दबोचती है। इस बीमारी के उपचार की भी कई औषधियां मौजूद हैं। किंतु हमारे प्राचीन मनीषियों ने प्राणायाम से इसे नियंत्रित करने की चेष्टा को सर्वोत्तम उपचार घोषित किया है। इसमें वक्षस्थल रेचक प्राणायाम को बहुत उपयोगी बताया गया है। इसकी विधि इस प्रकार है -

यह प्राणायाम करने के लिए सर्वप्रथम सुखासन में बैठें। नाक के दोनों छिद्रों से श्वास भीतर खींचे। फिर उसे धीरे-धीरे बाहर निकालें। श्वास के पूरा बाहर निकलने पर उसे वहीं रोक लें। योग की भाषा में इसे बाह्य कुंभक कहते हैं। अब दोनों हाथों को कंधों पर इस तरह रखें कि कोहनियाँ ऊँची उठी हुई दृष्टिगोचर हों। उसके बाद छाती को थोड़ा-थोड़ा ढीला करने का प्रयत्न करें ताकि वह संकुचित हो जाये और कंधों को आगे की ओर बढ़ायें। श्वास को सुविधा पूर्वक जितना रोका जा सके, उतना रोकें, फिर धीरे-धीरे छोड़ दें। यह प्रक्रिया एक वक्षस्थल रेचक प्राणायाम की हुई। इसका अभ्यास बढ़ाकर अधिक बार करने का भी प्रयत्न करना चाहिये। इसके नियमित अभ्यास से हृदय की धड़कन बढ़ जाने वाले रोगियों को काफी राहत मिलती है और अंततः बड़ी आसानी से इस भयंकर रोग के चंगुल से छुटकारा मिल जाता है।

क्रमशः

साप्ताहिक राशिफल

03 नवंबर से 09 नवंबर तक

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

3, 4 नवंबर को समय पुनः शुभ होगा तथा भाग्य साथ देगा उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। 5, 6 को समय शुभ तथा मान-सम्मान में वृद्धि होगी। 7, 8 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी तथा आरोप व आघात लग सकता है। शारीरिक व मानसिक कष्ट होगा संभव होगा। परिवार में विवाद संभव होगा। 9 को समय शुभ होगा। दाम्पत्य संबंध में मधुरता व लाभ होगा।

वृष (ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो)

3, 4 नवंबर को शनैः-शनैः हालात व परिस्थिति में सुधार महसूस करेंगे। यात्रादि से लाभ होगा। 5, 6 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। पिता या पिता तुल्य किसी व्यक्ति का सहयोग होगा 7, 8 को समय शुभ होगा तथा पूंजीनिवेश करना लाभप्रद सावित होगा। नये टेंडर व आर्डर आदि मिलेगा। 9 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। शुभ कार्य की योजना को स्थगित रखना उचित होगा।

मिथुन (का, कि, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

3, 4 नवंबर को समय प्रतिकूल होगा। महत्वपूर्ण कार्य को स्थगित रखें। 5, 6 को शनैः-शनैः परिस्थिति में सुधार होगा। सामाजिक कार्यो में रूचि बढेगी। 7, 8 तथा 9 को समय शुभ व अनुकूल होगा। प्रशासन व व्यवस्थादि के कार्य में विशेष सफलता के योग बनेंगे। भाई-बन्धु के सहयोग से कार्य सम्पन्न कर पायेंगे। देश-विदेश से शुभ समाचार प्राप्त होगा।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

3, 4 को समय शुभ है तथा नई व्यवसायिक योजना सफल होगी। 5, 6 सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। अपने विचारों के कारण कार्य में रुकावट व अपनों का असहयोग होगा। 7, 8 को समय मध्यम होगा तथा सामाजिक कार्यों में संलग्न होंगे। हस्त-कला आदि में रुचि होगी। 9 को ग्रह-गोचर अनुकूल होंगे। मनोकामना पूर्ण होगी। माता-पिता का सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

3, 4 को ग्रह-गोचर शुभ होगा। कार्य-व्यवसाय की स्थिति में सुधार होगा। 5, 6 को ग्रह-गोचर शुभ होगा तथा दाम्पत्य संबंध में सुधार व वैवाहिक सुख का आनंद लेंगे। स्त्री, मित्र से विशेष लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। 7, 8 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। शत्रु से परेशान हो सकते हैं। यात्रादि से कष्ट होना संभव हैं। 9 को समय व परिस्थिति में सुधार होगा तथा पिता का सहयोग प्राप्त होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

3, 4 को समय मध्यम होगा अधिकारी वर्ग से न उलझें। 5, 6 को समय शुभ होगा। कानूनी झंझटों से राहत मिल. `गा। 7, 8 को समय शुभ है। मनोइच्छित कार्य पूर्ण होंगे। वैवाहिक सुख होगा। 9 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी चोट आदि हानि व अशुभ समाचार होगा।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते)

3, 4 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। भाग-दौड़ व परेशानी का सामना करना पड़ेगा। 5, 6 को समय मध्यम होगा। विवादि की प्राप्ति का योग होगा। संतान संबंधी शुभ समाचार मिलेंगे। 7, 8 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। माता का विशेष सहयोग होगा। 9 को समय शुभ व अनुकूल होगा तथा घूमने-फिरने का अवसर प्राप्त होगा।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

3, 4 को समय शुभ है, दूर देश से शुभ समाचार प्राप्त होगा। 5, 6 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। व्यर्थ के विवादों का समाना करना पड़ सकता है। भूमि-वाहन के सौदे में हानि का भय। 7, 8 को समय मध्यम है। कुछ चिन्ता व परेशानियों से राहत मिलेगा। पत्नी का सहयोग होगा। 9 को समय शुभ होगा कम्पटिशन आदि में लाभ होगा।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

3, 4 :- समय मध्यम है, दैनिक दिनचर्या प्रभावित हा. `गी। 5, 6 को ग्रह-गोचर की अनुकूलता शुभ फलप्रद हा. `गी। नये आर्डर व टेंडर आदि की प्राप्ति व धन लाभ होगा। 7, 8 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी तथा स्वास्थ्य की हानि होगी। 9 को समय मध्यम होगा विद्यार्थियों को विद्याध्ययन का योग व सहायता होगी और पेट संबंधी परेशानी हो सकती है।

मकर (भो, जा, जी, जो, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

3, 4 को समय शुभ होगा तथा नौकरी-पेशे आदि में लाभ होगा। 5, 6 को समय मध्यम होगा तथा कार्य सिद्धि आदि में विलम्ब होना संभव होगा। यात्रादि में सावधानी बरतना आवश्यक होगा। 7, 8 को समय शुभ होगा जिस किसी कार्य में हाथ डालेंगे सफलता आपके साथ होगी। 9 को समय प्रतिकूल होगा। महत्वपूर्ण कार्य आदि में बाधा उत्पन्न हो सकता है।

कुम्भ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

3, 4 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी तथा शत्रु हानि होने का प्रयास करेंगे। 5, 6 को समय व परिस्थिति में सुधार होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। 7, 8 को समय मध्यम है। आंख व गले संबंधी परेशानी होगी तथा धन खर्च होगा। 9 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी धन वृद्धि होगी तथा दूरस्थ के प्रियजनों से मिलने का अवसर व हर्ष होगा।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ , दे, दो, चा, ची)

3, 4 को समय शुभ होगा। संतान संबंधी शुभ समाचार प्राप्त होगा। 5, 6 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। चिकित्सा आदि पर व्यय व परिवार में विवाद संभव है। 7, 8 को समय अनुकूल होगा। जीवन साथी का सहयोग होगा। 9 को समय मध्यम है, कार्य-भार व परेशानी बढ़ेगी। दैनिक दिनचर्या प्रभावित होगी।

संतान, सुख-समृद्धि व आरोग्यता देने वाली छठ माता का महान व्रत

पूजा विधि व कथा

छठ पर्व भगवती षष्ठी माता की पूजा व उपासना का महान व्रत है जिसकी तैयारी मुख्य व्रत के दो दिन पहले से ही प्रारंभ हो जाती है।

छठ व्रत के अनुष्ठान से सुख-समृद्धि, संतान व आरोग्यता की प्राप्ति होती है। छठ माता की अनुकंपा से निःसंतानता का अभिशाप भी दूर हो जाता है और संतानों के समस्त कष्ट व संकट बड़ी आसानी से दूर हो जाते हैं। इस महान व्रत से बाझों को पुत्र, निर्धनों को धन व कोढ़ियों को भी कंचन सी काया की उपलब्धि हो जाती है। इस व्रत की महिमा का गान अनेकानेक पौराणिक प्रसंगों में प्राप्त होता है। इस व्रत में छठ-माता का पूजन करते हुए भगवान सूर्य को विशेष अर्घ्य समर्पित किया जाता है। छठ को दिन भर उपवास करते हुए सायं कालीन सूर्य को अर्घ्य समर्पित किया जाता है और दूसरे दिन सप्तमी को भी छठ-माता का पूजन करने के उपरांत भगवान सूर्य को अर्घ्य समर्पित करते हुए इस व्रत का समापन व पारण किया जाता है। इस व्रत की शुरुआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से ही हो जाती है जिसमें दिन भर निर्जल उपवास करने के उपरांत रात में खीर का पारण किया जाता है। फिर दूसरे दिन पंचमी को भी दिनभर निर्जल उपवास करते हुए रात में लौकी व मडुवा की रोटी से पारण करते हैं। तीसरे दिन भी निर्जल रहते हुए सायं कालीन सूर्य को अर्घ्य देते हैं और छठ उत्सव का समापन सप्तममी के दिन उगते सूरज को अर्घ्य देने के बाद होता है। इसके बाद ही

पारण किया जाता है।

कुछ लोग इसे सूर्य व्रत भी कहते हैं क्योंकि इस व्रत में सूर्य को विशेष अर्घ्य समर्पित किया जाता है किंतु बहुत कम लोगों को यह मालूम है कि छठ माता के नाम से इस प्रसिद्ध व्रत की प्रधान देवता छठ माता कौन हैं? ब्रह्मवैवर्त पुराण में छठ माता का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए इस व्रत की सनातन विधि का भी वर्णन किया गया है। पाठकों के ज्ञानवर्धन के लिए उस प्रसंग को यहां उद्धृत किया जा रहा है।

एक बार नारद जी ने भगवान नारायण से

छठ व्रत के अनुष्ठान से सुख-समृद्धि, संतान व आरोग्यता की प्राप्ति होती है। छठ माता की अनुकंपा से निःसंतानता का अभिशाप भी दूर हो जाता है और संतानों के समस्त कष्ट व संकट बड़ी आसानी से दूर हो जाते हैं। इस महान व्रत से बाझों को पुत्र, निर्धनों को धन व कोढ़ियों को भी कंचन सी काया की उपलब्धि हो जाती है।

कहा - प्रभो! भगवती षष्ठी (छठ माता), मंगल चण्डिका तथा देवी मनसा - ये देवियाँ मूल प्रकृति की कला मानी गयी हैं। मैं अब इनके प्राकट्य का प्रसंग यथार्थ रूप से सुनना चाहता हूँ।

भगवान नारायण कहते हैं - मुने, मूल प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने के कारण ये षष्ठी देवी कहलाती हैं। बालकों की ये अधिष्ठात्री देवी हैं। इन्हें विष्णुमाया और बालदा भी कहा जाता है। मातृकाओं में देवसेना नाम से ये प्रसिद्ध हैं।

शेष पेज 15 पर

सभी प्रतिकूलताएं समाप्त करती है पावन तिथि

आंवला नवमी या युगादि नवमी

कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी से सतयुग प्रारंभ हुआ था। इसलिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण तिथि है। इस दिन आंवले के वृक्ष की पूजा होती है। हजारों नर-नारियां आंवला की पूजा करते हैं और ब्राह्मणों को आंवले के वृक्ष के नीचे भोजन कराकर उन्हें दान-दक्षिणा देते हैं। उन्हें इस दिन आंवला भी दान देना चाहिए।

हमारे धर्मग्रंथों में कार्तिक मास में सूर्योदय के पूर्व नित्यप्रति श्रद्धाभाव से स्नान करना और भगवान कृष्ण की पूजा करना बहुत पुण्यप्रद माना गया है। कार्तिक स्नान से सभी प्रारब्ध जनित प्रतिकूलताएं समाप्त होती हैं। ग्रह बाधाओं और पापों-शापों का शमन होता है। कार्तिक स्नान करने वाले लोग शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को विशेष रूप से आंवले की पूजा करते हैं। आंवले को भगवान विष्णु व भगवान कृष्ण का प्रतीक मान कर भी पूजा की जाती है। इस दिन आंवले के वृक्ष के नीचे ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है और उन्हें दान-दक्षिणा से संतुष्ट कर उनका आशीर्वाद लिया जाता है। इस दिन गुप्त दान का भी विशेष महत्व है सफेद कुम्हड़ा (पेठा) में गुप्त रूप से सोने-चांदी के दान को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी वजह से कहीं-कहीं इसे कुष्मांड नवमी भी कहते हैं। ब्राह्मण भोजन के बाद आंवला वृक्ष के नीचे अपने कुटुंबियों के साथ भोजन करने पर अनेकानेक अशुभताओं का शमन हो जाता है।

आंवला या युगादि नवमी की कथा - काशी नगरी में एक वैश्य रहता था, वह बहुत धर्मात्मा और दानी था, परन्तु उसके कोई संतान न थी। एक दिन उस वैश्य की स्त्री से एक औरत ने कहा - तू किसी बच्चे की बलि भैरव पर चढ़ा दे तो तेरे संतान हो जायेगी। यह बात उस स्त्री ने अपने पति से कही। पति बोला - यह ठीक नहीं है, यदि किसी के बच्चे को मारकर मुझे भगवान भी मिलें तब भी मुझे स्वीकार नहीं है। बच्चे को प्राप्त करने की बात तो बहुत दूर है। पति की बात सुनकर वह चुप रही, परन्तु अपनी सहेली की बात नहीं भूली।

इस बात को सोचते-सोचते एक दिन उस वैश्य की स्त्री ने एक लड़की को भैरो बाबा के नाम पर कुएं में डाल दिया। लड़की की मृत्यु हो गयी, परन्तु उसके संतान नहीं हुई। संतान के बदले उसके शरीर से पाप फूट-फूट कर निकलने लगा। उसको कोढ़ हो गया। लड़की की मृत्यु उसकी आंखों के सामने नाचने लगी। वैश्य ने जब अपनी स्त्री से उसकी हालत का कारण पूछा तो उसने उस लड़की के विषय में बता दिया। तब वैश्य बोला - यह तुमने अच्छा नहीं किया क्योंकि ब्राह्मण वध, गौवध और बाल वध के अपराध से कोई मुक्त नहीं होता। अतः तुम गंगा किनारे रहो और नित्य प्रति गंगा स्नान करो।

इस बात को सुनकर वैश्य की पत्नी ने ऐसा ही किया। एक दिन गंगाजी उस वैश्य पत्नी के पास एक बूढ़ी स्त्री का रूप धारण करके आई और कहने लगीं - हे बेटी, तु मथुरा में जाकर कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी को व्रत रखना और आंवला की पूजा करके मथुरा की परिक्रमा करना। यह व्रत तीन वर्ष में तीन बार करना, इससे तेरा मंगल होगा। इतना कहकर गंगाजी अन्तर्ध्यान हो गयीं। उस वैश्य पत्नी ने यह बात अपने पति से कही। पति की आज्ञा ले उसने ऐसा ही किया। मथुरा में जाकर व्रत रखा आंवले की पूजा और मथुरा जी की पांच कोस की परिक्रमा की। उसने यह व्रत तीन वर्ष तक लगातार किया। इस व्रत के प्रभाव से उस वैश्य पत्नी का कोढ़ ठीक हो गया और एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ, जो अत्याधिक सुन्दर, सुशील एवं गुणवान था।

समुद्र से लेकर सरोवर तक जितने भी तीर्थ हैं, वे सभी अपने माहात्म्य की तभी तक गर्जना करते हैं, जबतक कि कार्तिक मास में भगवान विष्णु की प्रबोधिनी तिथि नहीं आ जाती। प्रबोधिनी एकादशी को एक ही उपवास कर लेने से मनुष्य हजार अश्वमेध तथा सौ राजसूय यज्ञ का फल पा लेता है। जो दुर्लभ है, जिसकी प्राप्ति असंभव है तथा जिसे त्रिलोक में किसी ने भी नहीं देखा है, ऐसी वस्तु के लिए भी याचना करने पर प्रबोधिनी एकादशी उसे देती है।

हजार अश्वमेध यज्ञ के बराबर पुण्यप्रद है

प्रबोधिनी एकादशी

प्रबोधिनी का महात्य पाप का नाश, पुण्य की वृद्धि तथा उत्तम बुद्धि वाले पुरुषों को मोक्ष प्रदान करने वाला है। समुद्र से लेकर सरोवर तक जितने भी तीर्थ हैं, वे सभी अपने महात्म्य की तभी तक गर्जना करते हैं, जबतक कि कार्तिक मास में भगवान विष्णु की प्रबोधिनी तिथि नहीं आ जाती। प्रबोधिनी एकादशी को एक ही उपवास कर लेने से मनुष्य हजार अश्वमेघ तथा सौ राजसूय यज्ञ का फल पा लेता है। जो दुर्लभ है, जिसकी प्राप्ति असंभव है तथा जिसे त्रिलोक में किसी ने भी नहीं देखा है, ऐसी वस्तु के लिए भी याचना करने पर प्रबोधिनी एकादशी उसे देती है। भक्तिपूर्वक उपवास करने पर मनुष्यों को हरिबोधिनी एकादशी ऐश्वर्य, सम्पत्ति, उत्तम बुद्धि, राज्य तथा सुख प्रदान करती है। मेरुपर्वत के समान जो बड़े-बड़े पाप हैं, उन सबको यह पापनाशिनी प्रबोधिनी एक ही उपवास से भस्म कर देती है। पहले के हजारों जन्मों में जो पाप किये गये हैं, उन्हें प्रबोधिनी की रात्रि का जागरण रूई की ढेरी के समान भस्म कर डालता है। जो लोग प्रबोधिनी एकादशी का मन से ध्यान करते तथा जो इसके व्रत का अनुष्ठान करते हैं, उनके पितर नरक के दुःखों से छुटकारा पाकर भगवान विष्णु के परमधाम को चले जाते हैं।

अश्वमेध आदि यज्ञों से भी जिस फल की प्राप्ति कठिन है,

शेष पेज 14 पर

कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी से एकादशी तक संपन्न होने वाले तुलसी विवाह के व्रत पूर्वक अनुष्ठान से न केवल हमारे जीवन में सुख-समृद्धि की सुगंध फैलती है बल्कि पूर्वकृत पापों व अभिशापों का भी शमन हो जाता है। चाहे किसी भी ग्रह की प्रतिकूलता से कष्ट मिलने जा रहें हो उनका भी निवारण तुलसी विवाह व्रत के अनुष्ठान से हो जाता है।

सभी मनोरथों की सिद्धि में सहायक है

तुलसी विवाह व्रत अनुष्ठान

हमारे जीवन में तरह-तरह की परिस्थितियां आती-जाती रहती हैं। कभी सुख आता है कभी दुख। सामान्य तौर पर इन्हें झेलते रहने के हम आदी हो गये हैं। किंतु कभी-कभी हमारे जीवन में ऐसा कुछ घटित होने लगता है कि हम भीतर से दहल उठते हैं। सुख के दिन तो कब आये और कब गये इसका पता ही नहीं चलता किंतु जब हमारे जीवन में दुस्सह्य प्रतिकूलताओं का दौर चलता है तो हम अपने आपको संभाल नहीं पाते। माना सुख-दुख के समस्त स्वाद हमें अपने ही पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप ही प्राप्त होते हैं किंतु दुख की वेदना में बड़े-बड़े ज्ञानियों का विवेक भी साथ नहीं दे पाता। ऐसी स्थिति में हमें प्रभु की भक्ति और शास्त्रोक्त अनुष्ठानों से बहुत लाभ मिलता है।

कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी से एकादशी तक संपन्न होने वाले तुलसी विवाह के व्रत पूर्वक अनुष्ठान से न केवल हमारे जीवन में सुख-समृद्धि की सुगंध फैलती है बल्कि पूर्वकृत पापों व अभिशापों का भी शमन हो जाता है। चाहे किसी भी ग्रह की प्रतिकूलता से कष्ट मिलने जा रहें हों उनका भी निवारण तुलसी विवाह व्रत के अनुष्ठान से हो जाता है। इस दिन किये जाने वाले दान व उपवास का फल शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त होता है और भगवाती तुलसी व भगवान विष्णु की अनुकंपा से सभी मनोरथों की सिद्धि हो जाती है।

कार्तिक शुक्ला नवमी को द्वापर युग प्रारम्भ हुआ था। शास्त्रों के अनुसार वह तिथि दान और उपवास में क्रमशः पूर्वाह्नव्यापिनी तथा पराह्नव्यापिनी हो तभी ग्राह्य है। इसी तिथि को (नवमी से एकादशी तक) यदि कोई मनुष्य शास्त्रोक्त विधि से तुलसी के विवाह का उत्सव व्रत व दान पूर्वक संपन्न करे तो उसे कन्यादान का महान फल होता है।

स्कंद पुराण में तुलसी विवाह की महिमा व विधि पर ब्रह्मा जी ने प्रकाश डाला है। वह कहते हैं - पूर्वकाल में कनक की पुत्री किशोरी ने एकादशी तिथि में सन्ध्या समय तुलसी की वैवाहिक विधि सम्पन्न की। इससे वह किशोरी वैधव्य दोष से मुक्त हो गयी। अब मैं उस उत्सव व व्रत की विधि बतलाता हूं - एक तोला स्वर्ण की भगवान विष्णु की सुन्दर प्रतिमा तैयार करावे अथवा अपनी शक्ति के अनुसार आधे या चौथाई तोले की ही प्रतिमा बनवा लें। फिर तुलसी और भगवान विष्णु की प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा करके स्तुति आदि के द्वारा भगवान को उठावें। पुनः पुरुषसूक्त के मन्त्रों द्वारा षोडशोपचार से पूजा करें। पहले देश-काल का स्मरण करके गणेश पूजन करें, फिर पुण्याहवाचन कराकर नान्दीश्राद्ध करें। तत्पश्चात् वेदमंत्रों के उच्चारण और बाजे आदि की ध्वनि के साथ भगवान विष्णु की प्रतिमा को तुलसी के निकट लाकर रखें। प्रतिमा को वस्त्रों से आच्छादित किये रहें। उस समय भगवान का इस प्रकार आवाहन करें - भगवान केशव!

आइये, देव! मैं आपकी पूजा करूँगा। आपकी सेवा में तुलसी को अर्पित करूँगा। आप मेरे सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करें।

इस प्रकार आवाहन के पश्चात् तीन-तीन बार अर्घ्य, पाद्य और विष्टर्ध्य का उच्चारण करके इन्हें बारी-बारी से भगवान को समर्पित करें। फिर आचमनीय का तीन बार उच्चारण करके भगवान को आचमन करावे। इसके बाद कांस्य के पात्र में दही, घी और मधु रखकर उसे कांस्य के

शेष पेज 15 पर

संभव है लीवर प्रत्यारोपण

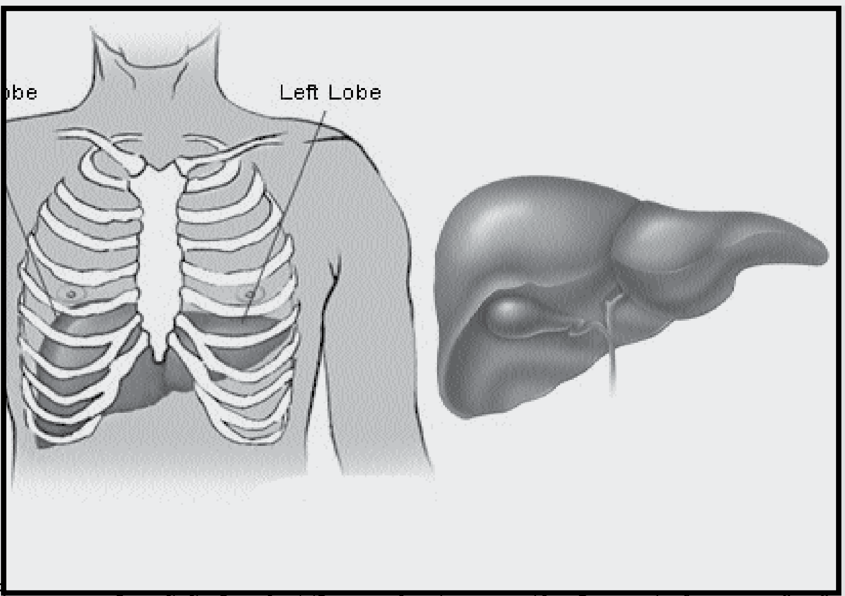

खराब लीवर को निकालकर नया लीवर लगाना ही लीवर प्रत्यारोपण कहलाता है। यह नया लीवर दो तरह से प्राप्त किया जा सकता है। पहला तो ब्रेनडेड इंसान से यानी ऐसा व्यक्ति जिसकी सांसें तो चल रही हों परंतु मस्तिष्क मृत हो चुका हो, ऐसे लोगों के डोनेटेड लीवर को लेकर प्रत्यारोपित किया जाता है।

लीवर या जिगर शरीर का महत्वपूर्ण अंग है जिसे स्वस्थ्य और सुरक्षित रखना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है और साथ ही लीवर को स्वस्थ रखने और सुरक्षित रखने में स्वयं की और चिकित्सा क्षेत्र की क्या भूमिका होनी चाहिए आइए जानें।

जिगर का उदाहरण कई मामलों में दिया जाता है विशेषकर मजबूती या साहस के प्रदर्शन में।

क्या है लीवर

लीवर शरीर का सबसे आंतरिक अंग है, जिसका वजन लगभग 1.5000 ग्राम होता है। यह सीने के नीचे दाहिने भाग में अवस्थित होता है।

लीवर का काम

लीवर पित्त बनाता है, जो भोजन पचाता है। विशेषकर वसायुक्त पदार्थों को। शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन लीवर में ही बनते हैं। यह शरीर में ग्लूकोज का भंडारण करता है और समय-समय पर आवश्यकतानुसार इसे निर्गत करता है। रक्त की सप्लाई लीवर द्वारा हृदय में पहुंचाई जाती है।

लीवर में बीमारी क्या होती है

- शराब पीने के कारण।
- वायरल हैपेटाइटिस जैसे ए.बी.सी एवं ई के कारण विभिन्न तरह के संक्रमण जैसे टीबी और अन्य संक्रमण से लीवर प्रभावित होता है।
- लीवर कैंसर के कारण भी प्रभावित होता हैं।
- बच्चों में अगर जन्मजात पित्त की नली नहीं बनती है, तब लीवर खराब हो जाता है। यह लगभग सालभर के अंदर कारण भी बच्चों में लीवर से संबंधित बीमारियां होती हैं।

लीवर के कारण उत्पन्न बीमारियों के लक्षण

इसका मुख्य लक्षण पीलिया होता है, जिसमें आंखें पीली हो जाती है, पेशाब पली होने लगता है, शरीर का वर्ण भी पीलेपन में बदलने लगता है। पीलिया होने के कई कारण होते हैं पर मुख्य कारण वायरल हैपेटाइटिस और शराब का सेवन होता है। बेतहाशा दवाइयों के उपयोग के कारण भी लीवर खराब होता है।

लीवर खराब क्यों होता है

इसकी खासियत यह है कि यह जल्दी खराब नहीं होता है। यह 70 फीसदी तक खराब होने पर भी काम करता रहता है। शराब के सेवन और वायरल होता है। वायरल हैपेटाइटिस ए और ई दूषित भोजन और जल के उपयोग से होता है। वायरल हैपेटाइटिस बी और सी रक्त और दूसरों को दूषित रक्त चढ़ाने के कारण भी होता है। यह सीरिंज के पुनः उपयोग के कारण भी होता है तथा संक्रमित व्यक्ति से असुरक्षित यौन संबंध बनाने पर संक्रमित गर्भवती मां से पैदा हुए बच्चे का भी लीवर खराब होता है। स्वच्छ पानी और भोजन के उपयोग से लीवर को खराब होने से बचाया जा सक्ता है।

लीवर खराब होने पर दिखने वाले लक्षण

मुख्य लक्षण पीलिया है। पेट में पानी भरने लगता है और खून की उल्टी होने लगती है। मानसिक रूप से असंतुलित हो जाना और बेहोशी की हालत में साथ ही शरीर पर नीले धब्बे पड़ने लगते हैं।

लीवर का इलाज

लीवर खराब होने पर कई तरह के उत्पन्न लक्षणों को अलग-अलग इलाज किया जाता है। जैसे अगर पथरी हो तो पथरी निकालने से व्यक्ति रोगमुक्त हो जाता है। जन्मजात पित्त की नली अगर नहीं बनी हो तो उसे आपरेशन के माध्यम से बनाया जाता है। लीवर को खराब होने से बचाने के लिए अच्छी खुराक या पोषक भोजन की आश्यकता होती है, जिससे शरीर को सभी तत्व मिल सकें, परंतु लीवर खराब होने पर लगभग 25 प्रतिशत के होने में ही ठीक होता है और अगर दवाइयों से यह नहीं बच पाता है तो एक ही उपाय होता है - लीवर प्रत्यारोपण।

लीवर प्रत्यारोपण

खराब लीवर को निकालकर नया लीवर लगाना ही लीवर प्रत्यारोपण कहलाता है। यह नया लीवर दो तरह से प्राप्त किया जा सकता है। पहला तो ब्रेनडेड इंसान से यानी ऐसा व्यक्ति जिसकी सांसें तो चल रही हों परंतु मस्तिष्क मृत हो चुका हो ऐसे लोगों के डोनेटेड लीवर को लेकर प्रत्यारोपित किया जाता है। दूसरा लीवर किसी नजदीकी रिश्तेदार से भी लिया जा सकता है। लीवर या जिगर प्रत्यारोपण में ब्लड ग्रुप मैचिंग की आवश्यकता होती है। जिस व्यक्ति का लीवर प्रत्यारोपण होता है उसे आजीवन कुछ दवाएं लेनी होती हैं। आज लीवर प्रत्यारोपण के परिणाम भारत में काफी अच्छे हैं।

पेज 9 का शेष

जन्म मरण के चक्र...

के चरणों में मन लगाकर उनकी सेवा में तत्पर रहने का भाव अति उत्तम है। सारे संसार का सुख मिल जाये। यहां तक कि यदि तीनों लोकों का राज्य भी मिल जाए तो भी भगवान का सेवक बनना उचित होगा। लक्ष्मण जी ने भी भगवान की सेवा का व्रत लिया। हनुमान जी भी भगवान के नित्य सेवक बन गये। उन्होंने भगवान को मालिक व स्वयं को उनका सेवक हो जाने का व्रत ले लिया।

निष्कपट भाव से बिना किसी स्वार्थ के ईश्वर के प्रति समर्पित और प्रभु की सेवा में तल्लीन रहकर जीवन यापन करना जीव को उत्तम अवस्था में ले जाता है। इस संसार में बिना किसी स्वार्थ व दिखावे के सभी में ईश्वर का दर्शन करता हुआ भक्त परमात्मा की सेवा भक्ति करने का भाव दिल से रखकर समाज के असहाय, निर्धन तथा रोगी आदि की सहायता करते रहना शुभकर्म संपादित करते रहने की प्रक्रिया है। यही उस परमात्मा की सच्ची सेवा कही जाती है। सच कहिए तो एक मात्र ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है और वही सर्व सहायक भी है। हमारे अंदर जो भी शक्तियां हैं सब ईश्वरीय कृपा से ही उपलब्ध हुई हैं। इसलिए मनुष्य को कभी सेवा-भक्ति करने का अभिमान नहीं करना चाहिए। इस संसार में हम जो भी सेवा कर रहे हैं उसकी शक्ति हमें परमात्मा से ही प्राप्त होती है। जो भक्त तहेदिल से इस बात को स्वीकार कर लेता है है वह तुरंत त्रिविध तापों से मुक्त हो जाता है। उसे जन्म-मरण के चक्र से सदा के लिए छुटकारा मिल जाता है।

पेज 13 का शेष

प्रबोधिनी एकादशी...

वह प्रबोधिनी एकादशी को जागरण करने से अनायास ही मिल जाता है। सम्पूर्ण तीर्थों में नहाकर सुवर्ण अथवा पृथ्वी दान करने से जो

फल मिलता है, वह श्रीहरि के निमित्त जागरण करने मात्र से मनुष्य प्राप्त कर लेता है। जैसे मनुष्यों के लिये मृत्यु अनिवार्य है, उसी प्रकार धन सम्पत्ति मात्र भी क्षण भंगुर है, ऐसा समझकर एकादशी का व्रत करना चाहिए। तीनों लोकों में जो कोई भी तीर्थ संभव है, वे सब प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करने वाले मनुष्य के घर में मौजूद रहते हैं। कार्तिक हरिबोधिनी एकादशी पुत्र तथा पौत्र प्रदान करने वाली है, वही योगी है, वही तपस्वी और जितेन्द्रिय है तथा उसी को भोग और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

प्रबोधिनी एकादश को भगवान विष्णु के उद्देश्य से मानव जो स्नान, दान, जप और होम करता है, वह सब अक्षय होता है। जो मनुष्य उस तिथि को उपवास करके भगवान माधव की भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं, वे सौ जन्मों के पापों से छुटकारा पा जाते हैं। इस व्रत के द्वारा देवेश्वर, जनार्दन को सन्तुष्ट करके मनुष्य सम्पूर्ण दिशाओं को अपने तेज से प्रकाशित करता हुआ श्रीहरि के वैकुण्ठ धाम को जाता है। प्रबोधिनी को पूजित होने पर भगवान गोविन्द मनुष्यों के बचपन, जवानी और बुढ़ापे में किये हुए सौ जन्मों के पापों को, चाहे वे अधिक हों या कम, धो डालते हैं। अतः सर्वथा प्रयत्न करके सम्पूर्ण मनोवांछित फलों को देने वाले देवाधिदेव जनार्दन की उपासना करनी चाहिए।

जो अन्न का त्याग करता है, वह चान्द्रायण व्रत का फल पाता है। जो प्रतिदिन शास्त्रीय चर्चा से मनोरंजन करते हुए कार्तिक मास व्यतीत करता है, वह अपने सम्पूर्ण पापों को जला डालता है और दस हजार यज्ञों का फल प्राप्त करता है।

कार्तिक मास में शास्त्रीय कथा के कहने-सुनने से भगवान मधुसूदन को जैसा संतोष होता हे, वैसा उन्हें यज्ञ,दान अथवा जप आदि से भी नहीं होता। जो शुभकर्म-परायण पुरुष कार्तिक मास में एक या आधा श्लोक भी भगवान विष्णु की कथा बाँचते हैं, उन्हें सौ गोदान का फल मितलता है।

जो भगवान विष्णु की कथा सुनकर अपनी शक्ति के अनुसार

कथा-वाचक की पूजा करते हैं,, उन्हें अक्षय लोक की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य कार्तिक कास में भगवत्संबंधी गीत और शास्त्रविनोद के द्वारा समय बिताता है, उसकी पुनरावृत्ति नहीं होती। जो पुण्यात्मा पुरुष भगवान के समक्ष स्तवन, नृत्य, वाद्य और श्रीविष्णु की कथा करता है, वह तीनों लोकों के ऊपर विराजमान होता है।

कार्तिक की प्रबोधिनी एकादशी के दिन बहुत से फल-फूल, कपूर, अरगजा और कुंकुम के द्वारा श्रीहरि की पूजा करनी चाहिए। एकादशी आने पर धन की कंजूसी नहीं करनी चाहिए क्योंकि उस दिन दान आदि करने से असंख्य पुण्य की प्राप्ति होती है। प्रबोधिनी को जागरण के समय शंख में जल लेकर फल तथा नान प्रकार के द्रव्यों के साथ श्री जनार्दन को अर्घ्य देना चाहिए। सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान करने और सब प्रकार के दान देने से जो फल मिलता है, वही प्रबोधिनी एकादशी को अर्घ्य देने से करोड़ गुना हो कर प्राप्त होता है।

अर्घ्य के पश्चात भोजन आच्छायन और दक्षिणा आदि के द्वारा भगवान विष्णु की प्रसन्नता के लिए गुरु की पूजा करनी चाहिए। जो मनुष्य उस दिन श्रीमद्भागवत की कथा सुनता अथवा पुराण का पाठ करता है, उसे एक-एक अक्षर पर कपिलादान कर फल मिलता है।

कार्तिक में जो मनुष्य अपनी शक्ति के अनुसार शास्त्रोक्त रीति से वैष्णवव्रत का पालन करता है, उसकी मुक्ति अविचल है। केतकी के एक पत्ते से पूजित होने पर भगवान गरुड़ध्वज एक हजार वर्ष तक अत्यन्त तृप्त रहते हैं। जो अगस्त के फूल से भगवान जनार्दन की पूजा करता है, उसके दर्शनमात्र से नरक की आग बुझ जाती है। जो कार्तिक में भगवान जनार्दन को तुलसी के पत्र और पुष्प अर्पण करते हैं, उनका जन्मभर का किया हुआ सारा पाप भस्म हो जाता है। जो प्रतिदिन दर्शन, स्पर्श, ध्यान, नाम-कीर्तन, स्तवन, अर्पण, सेचन, नित्यपूजन तथा नमस्कार के द्वारा तुलसी की नौ प्रकार की भक्ति करते हैं, वे कोटि सहस्त्र युगों तक पुण्य का विस्तार करते हैं। भगवान को सब प्रकार के फूलों और पत्तों को चढ़ानें से जो फल होता है, वह कार्तिक मास में तुलसी के एक पत्ते को चढ़ाने से मिल जाता है। कार्तिक आया देख प्रतिदनि नियमपूर्वक तुलसी के कोमल पत्तों से महाविष्णु श्री जनार्दन का पूजन करना चाहिए। सौ यज्ञों द्वारा देवताओं का यजन करने और अनेक प्रकार के दान देने से जो पुण्य होता है, वह कार्तिक में तुलसी दल मात्र से केशव की पूजा करने पर प्राप्त हो जाता है।

पेज 12 का शेष

सूर्य षष्ठी व्रत...

उत्तम व्रत का पालन करने वाली इन साध्वी देवी को स्वामी कार्तिकेय की पत्नी होने का सौभाग्य प्राप्त है। वे प्राणों से भी बढ़कर इनसे प्रेम करते हैं। बालकों को दीर्घायु बनाना तथा उनका भरण-पोषण एवं रक्षण करना इनका स्वाभाविक गुण है। ये सिद्धियोगिनी देवी अपने योग के प्रभाव से बच्चों के पास सदा विराजमान रहती हैं। ब्रह्मन! इनकी पूजा-विधि के साथ ही यह एक उत्तम इतिहास सुनो। पुत्र प्रदान करने वाला यह परम सुखदायी उपाख्यान धर्मदेव के मुख से मैंने सुना है। प्रियव्रत नाम से प्रसिद्ध एक राजा हो चुके हैं। उनके पिता का नाम था - स्वयम्भुव म7नु। प्रियव्रत योगिराज होने के कारण विवाह करना नहीं चाहते थे। तपस्या में उनकी विशेष रुचि थी। परंतु ब्रह्माजी की आज्ञा तथा सत्प्रयत्न के प्रभाव से उन्होंने विवाह कर लिया। मुने, विवाह के बाद सुदीर्घकाल तक उन्हें कोई भी संतान नहीं हो सकी। तब कश्यप जी ने उनसे पुत्रेष्टियज्ञ कराया। राजा की प्रेयसी भार्या का नाम मालिनी था। मुनि ने उन्हें चरु प्रदान किया। चरु-भक्षण करने के पश्चात रानी मालिनी गर्भवती हो गयीं। तत्पश्चात सुवर्ण के समान प्रतिभा वाले एक कुमार की उत्पत्ति हुई परंतु संपूर्ण अंगों से सम्पन्न वह कुमार मरा हुआ था। उसकी आंखें उलट चुकी थीं। उसे देखकर समस्त नारियां तथा बान्धवों की स्त्रियाँ भी रो पड़ीं। पुत्र के असह्य शोक के कारण माता को मूर्छा आ गयी।

मुने, राजा प्रियवत उस मृत बालक को लेकर श्मशान में गये। उस एकान्त भूमि में पुत्र को छाती से चिपकाकर आँखों से आँसुओं की धारा बहाने लगे। इतने में उन्हें वहाँ एक दिव्य विमान दिखायी पड़ा। शुद्ध स्फटिक मणि के समान चमकने वाला वह विमान अमूल्य रत्नों से बना था। तेज से जगमगाते हुए उस विमान की रेशमी वस्त्रों से अनुपम शोभा हो रही थी। अनेक प्रकार के अद्भुत चित्रों से वह विभूषित था। पुष्पों की माला से वह सुसज्जित था। उसी पर बैठी हुई मन को मुग्ध करने वाली एक परम सुन्दरी देवी को राजा प्रियवत ने देखा। श्वेत चम्पा के फूल के समान उनका उज्ज्वल वर्ण था। सदा सुस्थिर तारुण्य से शोभा पाने वाली वे देवी मुस्करा रही थीं। उनके मुख पर प्रसन्नता छायी थी। रत्नमय भूषण उनकी छवि बढ़ाये हुए थे। योगशास्त्र में पारंगत वे देवी भक्तों पर अनुग्रह करने के लिये आतुर थीं। ऐसा जान पड़ता था माने वे मूर्तिमती कृपा ही हों। उन्हें सामने विराजमान देखकर राजा ने बालक को भूमि पर रख दिया और बड़े आदर के साथ उनकी पूजा और स्तुति की। नारद! उस समय स्कन्द की प्रिया देवी षष्ठी अपने तेज से देदीप्यमान थीं। उनका शांत विग्रह ग्रीष्मकालीन सूर्य के समान चमचमा रहा था। उन्हें प्रसन्न देखकर राजा ने पूछा - सुशोभने! कान्ते! सुव्रते! वरारोहे! तुम कौन हो, तुम्हारे पतिदेव कौन हैं और तुम किसकी कन्या हो? तुम स्त्रियों में धन्यवाद एवं आदर की पात्र हो। नारद! जगत को मंगल प्रदान करने में प्रवीण तथा देवताओं के रण में सहायता पहुँचाने वाली वे भगवती देवसेना थीं। पूर्वसमय में देवता दैत्यों से ग्रस्त हो चुके थे। इन देवी ने स्वयं सेना बनकर देवताओं का पक्ष ले युद्ध किया था। इनकी कृपा से देवता विजयी हो गये थे। अतएव इनका नाम देवसेना पड़ गया।

महाराज प्रियव्रत की बात सुनकर छठ माता उनसे कहने लगीं - राजन्! मैं ब्रह्मा की मानसी कन्या हूँ। जगत पर शासन करने वाली मुझ देवी का नाम देवसेना है। विधाता ने मुझे उत्पन्न करके स्वामी कार्तिकेय को सौंप दिया है। मैं संपूर्ण मातृकाओं में प्रसिद्ध हूँ। स्कन्द की पतिव्रता भार्या होने का गौरव मुझे प्राप्त है। भगवती मूलप्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने के कारण विश्व में देवी षष्ठी (छठ माता) नाम से मेरी प्रसिद्धि है। मेरे प्रसाद से पुत्रहीन व्यक्ति सुयोग्य पुत्र, प्रियाहीन जन प्रिया, दरिद्री धन तथा कर्मशील पुरुष कर्मों के उत्तम फल प्राप्त कर लेते हैं। राजन्! सुख, दुख, भय, शोक, हर्ष, मंगल संपत्ति और विपत्ति ये सब कर्म के अनुसार होते हैं। अपने ही कर्म के प्रभाव से पुरुष अनेक पुत्रों का पिता होता है और कुछ लोग पुत्रहीन भी होते हैं। किसी को मरा हुआ पुत्र होता है और किसी को दीर्घजीवी - यह कर्म का ही फल है। गुणी, अंगहीन, अनेक पत्नियों का स्वामी, भार्याहित, रूपवान, रोगी और धर्मी होने में मुख्य कारण अपना कर्म ही है। कर्म के अनुसार ही व्याधि होती है और पुरुष आरोग्यवान भी हो जाता है। अतएव राजन्! कर्म सबसे बलवान है - यह बात श्रुति में कही गयी है।मुने! इस प्रकार कहकर देवी षष्ठी (छठ माता) ने उस बालक को उठा लिया और अपने महान ज्ञान के प्रभाव से खेल-खेल में ही उसे पुनः जीवित कर दिया। अब राजा ने देखा तो सुवर्ण के समान प्रतिभा वाला वह बालक हँस रहा था। अभी महाराज प्रियव्रत उस बालक की ओर देख ही रहे थे कि देवी देवसेना उस बालक को लेकर आकाश में जाने को तैयार हो गयीं। ब्रह्मन! यह देख राजा के कंठ, होंठ और तालू सूख गये, उन्होंने पुनः देवी की स्तुति की। तब संतुष्ट हुई देवी ने राजा से वेदोक्त वचन कहा॥ देवी छठ माता ने कहा - तुम स्वायम्भुव मनु के पुत्र हो। त्रिलोकी में तुम्हारा शासन चलता है। तुम सर्वत्र मेरी पूजा कराओ और स्वयं भी करो। तब मैं तुम्हें कमल के समान मुख वाला यह मनोहर पुत्र प्रदान करूँगी। इसका नाम सुव्रत होगा। इसमें सभी गुण और विवेकशक्ति विद्यमान रहेगी। यह भगवान नारायण का कलावतार तथा प्रधान योगी भी होगा। इसे पूर्वजन्म की बातें याद रहेंगी। क्षत्रियों में श्रेष्ठ यह बालक सौ अश्वमेघ यज्ञ करेगा। सभी इसका सम्मान करेंगे। उत्तम बल से संपन्न होने के कारण यह ऐसी शोभा पायेगा, जैसे लाखों हाथियों में सिंह। यह धनी, गुणी, शुद्ध, विद्वानों का प्रेमभाजन तथा योगियों, ज्ञानियों एवं तपस्वियों का सिद्धरूप होगा। त्रिलोकी में इसकी कीर्ति फैल जायेगी। यह सबको सब संपत्ति प्रदान कर सकेगा।

इस प्रकार कहने के पश्चात भगवती देवसेना (छठ माता) ने उन्हें वह पुत्र दे दिया। राजा प्रियव्रत ने पूजा की सभी बातें स्वीकार कर लीं। इस प्रकार भगवती देवसेना (छठ माता) ने उन्हें उत्तम वर दे स्वर्ग के लिये प्रस्थान किया। राजा भी प्रसन्न होकर मंत्रियों के साथ अपने घर लौट आये। आकर पुत्रविषयक वृत्तान्त सबसे कह सुनाया। नारद! यह प्रिय वचन सुनकर स्त्री और पुरुष सब-के-सब परम संतुष्ट हो गये। राजा ने सर्वत्र पुत्र-प्राप्ति के उपलक्ष में मांगलिक कार्य आरंभ करा दिया। भगवती की पूजा की। ब्राह्मणों को बहुत सा धन दान किया। तब से प्रत्येक मास में शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि के अवसर पर भगवती षष्ठी (छठ माता) का महोत्सव यत्नपूर्वक मनाया जाने लगा। बालकों के प्रसवगृह में छठे दिन, इक्कीसवें दिन तथा अन्न प्राशन के शुभ समय पर यत्न पूर्वक देवी छठ माता की पूजा होने लगी। सर्वत्र इसका पूरा प्रचार हो गया। स्वयं राजा प्रियव्रत भी पूजा करते थे।

सुव्रत! अब भगवती देवसेना (छठ माता) का ध्यान, पूजन, स्तोत्र कहता हूँ सुनो। यह प्रसंग कौथुमशाखा में वर्णित है। धर्मदेव के मुख से सुनने का मुझे अवसर मिला था। मुने! शालग्राम की प्रतिमा, कलश अथवा वट के मूल भाग में या दीवाल पर पुत्तलिका बनाकर प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने वाली शुद्धस्वरूपिणी इन भगवती छठ माता की इस प्रकार पूजा करनी चाहिये। विद्वान पुरुष इनका इस प्रकार ध्यान करे - सुन्दर पुत्र, कल्याण तथा दया प्रदान करने वाली ये देवी जगत की माता हैं। श्वेत चम्पक के समान इनका वर्ण है। रत्नमय भूषणों से ये अलंकृत हैं। इन परम पवित्ररूपिणी भगवती देवसेना की मैं उपासना करता हूँ। विद्वान पुरुष यों ध्यान करके मलूमंत्र से इन साध्वी देवी की पूजा करने का विधान है। पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, गंध, पुष्प, दीप, विविध प्रकार के नैवेद्य तथा सुन्दर फल द्वारा भगवती की पूजा करनी चाहिये। उपचार अर्पण करने के पूर्व 'ॐ ह्रीं षष्ठी देव्यै स्वाहा' इस मंत्र का उच्चारण करना विहित है। पूजक पुरुष को चाहिये कि यथाशक्ति इस अष्टाक्षर महामंत्र का जप भी करे। तदनन्तर मन को शांत करके भक्तिपूर्वक स्तुति करने के पश्चात देवी को प्रणाम करे। फल प्रदान करने वाला यह उत्तम स्तोत्र सामवेद में वर्णित है। जो पुरुष देवी के उपर्युक्त अष्टाक्षर महामंत्र का एक लाख जप करता है, उसे अवश्य ही उत्तम पुत्र की प्राप्ति होती है, ऐसा ब्रह्माजी ने कहा है। मुनिवर! अब संपूर्ण शुभ कामनाओं को प्रदान करने वाला स्तोत्र सुनो। नारद! सबका मनोरथ पूर्ण करने वाला यह स्तोत्र वेदों में गोप्य है। देवी को नमस्कार है। महादेवी को नमस्कार है। भगवती सिद्धि एवं शांति को नमस्कार है। शुभा, देवसेना एवं भगवती षष्ठी (छठ माता) को बार-बार नमस्कार है। वरदा, पुत्रदा, धनदा, सुखदा एवं मोक्षप्रदा भगवती षष्ठी (छठ माता) को बार-बार नमस्कार है। मूलप्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने वाली भगवती सिद्धा को नमस्कार है। माया, सिद्धयोगिनी, सारा, शारदा और परादेवी नाम से शोभा पाने वाली भगवती षष्ठी (छठ माता) को बार-बार नमस्कार है। बालकों की अधिष्ठात्री, कल्याण प्रदान करने वाली, कल्याणस्वरूपिणी एवं कर्मों के फल प्रदान करने वाली देवी षष्ठी (छठ माता) को बार-बार नमस्कार है। अपने भक्तों को प्रत्यक्ष दर्शन देने वाली तथा सबके लिये संपूर्ण कार्यों मे पूजा प्राप्त करने की अधिकारिणी स्वामी कर्तिकेय की प्राणप्रिया देवी षष्ठी (छठ माता) को बार-बार नमस्कार है। मनुष्य जिनकी सदा वन्दना करते हैं तथा देवताओं की रक्षा में जो तत्पर रहती हैं, उन शुद्ध-सत्वस्वरूपा देवी षष्ठी (छठ माता) को बार-बार नमस्कार है। हिंसा और क्रोध से रहित भगवती षष्ठी (छठ माता) को बार-बार नमस्कार है। सुरेश्वरि! तुम मुझे धन दो, प्रिया पत्नी दो और पुत्र देने की कृपा करो। महेश्वरि! तुम मुझे सम्मान दो, विजय दो और मेरे शत्रुओं का संहार कर डालो। धन और यश प्रदान करने वाली भगवती षष्ठी (छठ माता) को बार-बार नमस्कार है। सुपूजिते! तुम भूमि दो, प्रजा दो, विद्या दो तथा कल्याण एवं जय प्रदान करो। तुम षष्ठी देवी (छठ माता) को बार-बार नमस्कार है।

इस प्रकार स्तुति करने के पश्चात महाराज प्रियव्रत ने षष्ठी देवी (छठ माता) के प्रभाव से यशस्वी पुत्र प्राप्त कर लिया। ब्रह्मन्! जो पुरुष भगवती षष्ठी (छठ माता) के इस स्तोत्र को एक वर्ष तक श्रवण करता है, वह यदि अपुत्री हो तो दीर्घजीवी सुन्दर पुत्र प्राप्त कर लेता है। जो एक वर्ष तक भक्तिपूर्वक देवी की पूजा करके इनका यह स्तोत्र सुनता है, उसके संपूर्ण पाप विलीन हो जाते हैं। महान बन्ध्या भी इसके प्रसाद से संतान प्रसव करने की योग्यता प्राप्त कर लेती है। वह भगवती देवसेना की कृपा से गुणी, विद्वान, यशस्वी दीर्घायु एवं श्रेष्ठ पुत्र की जननी होती है। काक बन्ध्या अथवा मृतवत्सा नारी एक वर्ष तक इसका श्रवण करने के फलस्वरूप भगवती षष्ठी (छठ माता) के प्रभाव से पुत्रवती हो जाती है। यदि बालक को रोग हो जाये तो उसके माता-पिता एक मास तक इस स्तोत्र का श्रवण करें तो षष्ठी देवी (छठ माता) की कृपा से उस बालक की व्याधि शांत हो जाती है।

पेज 13 का शेष

तुलसी विवाह....

पात्र से ही ढक दें तथा भगवान को अर्पण करते हुए इस प्रकार कहें - वासुदेव! आपको नमस्कार है, यह मधुपर्क ग्रहण कीजिए। तदनन्तर हरिद्रालेपन और अभ्यङ्ग-कार्य सम्पन्न करके गोधूलि की बेला में तुलसी और श्री विष्णु का पूजन पृथक्-पृथक् करना चाहिए। दोनों को एक-दूसरे के सम्मुख रखकर मङ्गल पाठ करें। जब भगवान सूर्य कुछ-कुछ दिखायी देते हों, तब कन्यादान का संकल्प करें। अपने गोत्र और प्रवर का उच्चारण करके आदि की तीन पीढ़ियों का भी आवर्तन करें। तत्पश्चात् भगवान से इस प्रकार निवेदन करें - आदि, मध्य और अन्त से रहित त्रिभुवन प्रतिपालक परमेश्वर! इस तुलसी को आप विवाह की विधि से ग्रहण करें। यह पार्वती के बीज से प्रकट हुई है, वृन्दा की भस्म में स्थित रही है तथा आदि, मध्य और अन्त से शून्य है। आपको तुलसी बहुत ही प्रिय है, अतः इसे मैं आपकी सेवा में अर्पित करता हूं। मैंने जल के घड़ों से सींचकर और अन्य प्रकार की सेवाएं करके अपनी पुत्री की भांति इसे पाला, पोसा और बढ़ाया है, आपकी प्रिया तुलसी मैं आपको ही दे रहा हूं। प्रभो! आप इसे ग्रहण करें। इस प्रकार तुलसी का दान करके फिर उन दोनों (तुलसी और विष्णु) की पूजा करें। विवाह का उत्सव मनाये। सवेरा होने पर पुनः तुलसी और विष्णु का पूजन करें। अग्नि की स्थापना करके उसमें द्वादशाक्षरमन्त्र से खीर, घी, मधु और तिलमिश्रित हवनीय द्रव्य की एक सौ आठ आहुति दे। फिर स्विष्टकृत् होम करके पूर्णाहुति दें। आचार्य की पूजा करके होम की शेष विधि पूरी करें। उसके बाद भगवान से इस प्रकार प्रार्थना करें - देव! प्रभो!! आपकी प्रसन्नता के लिए मैंने यह व्रत किया है। जनार्दन! इसमें जो न्यूनता हो, वह आपके प्रसाद से पूर्णता को प्राप्त हो जाय। तदनन्तर भगवान का विसर्जन करते हुए कहे - भगवन्! आप तुलसी के साथ वैकुण्ठधाम में पधारें। प्रभो! मेरे द्वारा की हुई पूजा ग्रहण करके आप सदा सन्तुष्ट रहें। इस प्रकार देवेश्वर विष्णु का विसर्जन करके मूर्ति आदि सब सामग्री आचार्य को अर्पण करें। इससे मनुष्य कृतार्थ हो जाता है।

हमारे प्रकाशन

श्री शनिचरणानुरागी श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर दाती जी महाराज राजस्थानी ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर अनेकानेक पुस्तकों की रचना की है। उनके अनेक ग्रंथ तो अब भी अप्रकाशित पड़े हुए हैं। प्रभु की कृपा से हम उनकी निम्नलिखित पुस्तकों को प्रकाशित करने में सफल हुए हैं, जिनकी काफी दिनों से प्रतीक्षा की जा रही थी। आशा है, इन पुस्तकों से पाठकगण विशेष लाभ उठाने में सफल होंगे।

ज्योतिष व वास्तु

पुस्तक का नाम मूल्य (रु.)
सरल ज्योतिष प्रवेशिका 200
सरल गोचर प्रवेशिका................200
सरल मुहूर्त प्रवेशिका.................100
सरल वास्तु प्रवेशिका.................150
सरल हस्तरेखा विज्ञान प्रवेशिका...150
ताजिक ज्योतिष.......................150
सामान्य ज्योतिष एवं खगोल..........50
शनि समग्र दर्शन (प्रथम भाग)....200
शनि समग्र दर्शन (द्वितीय भाग)...200
शनि साधना के चमत्कारिक प्रयोग....100
द्वादश भावों में श्री शनिदेव..........100
क्या है शनि की साढेसाती और ढैय्या...100
शनि उपासना क्यों और कैसे?.....200
शनि चरित्र गाथा व शनितीर्थ महात्म्य...100
शनि शांति के अमोघ देव अनुष्ठान.....100
शनिवार व्रत विधि व कथा............25
काल सर्प योग.........................100

स्वास्थ्य व चिकित्सा

पुस्तक का नाम मूल्य (रु.)
भोग रोग योग.........................200
चमत्कार को नमस्कार................100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 1......100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 2 200
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 3 200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 1...125
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 2 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 3 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 4 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 5 ..200
ग्रह-नक्षत्र शांति द्वारा रोगोपचार......80
मंत्रों द्वारा रोगोपचार....................30
आसनों द्वारा रोगोपचार..................30
प्राणायाम द्वारा रोगोपचार..............25
रोगोपचार में उपयोगी हस्त मुद्राएं....30
रोगोपचार में उपयोगी रत्न..............25
सूर्य रश्मियों के रंगों से रोगोपचार....20
तन-मन के रोगों से मुक्ति की युक्ति.....25
आसनःआरोग्यता का अनुपम साधन..225
प्राणायाम 150

अध्यात्म

खुला आमंत्रण परमानन्द के लिए..100
मानुष तन दुर्लभ अति..................30
हे कौन? जाओगे कहां? जानोगे कैसे?....100
जीवन शांत मन के साथ...............35
तनाव मुक्त जीवन.......................35
गीता : मोह से मोक्ष तक की गाथा..50
लाली मेरे लाल की...................125
समाधान...............................150
एक शाश्वत खोज.....................125
मर्म की बातें (I,II,III)............ 75
कुडलिनी जागरण.....................200
सफलता के सनातन सूत्र-प्रथम पुष्प....125
कार्य सफलता में बाधक तनाव 125
Living with peace of life.........35
Eternal Bliss...................150
Shedding of stress.............50
Effectuation of Shani Adoration...200
Tiny Tips 125

संपर्क करें - श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम ट्रस्ट, श्री शनि तीर्थ क्षेत्र असोला, फतेहपुर बेरी, महरोली, नई दिल्ली-74 फोन - 26654400, 26653600, फैक्स : 26653500

आप भी कर सकते हैं शाश्वत सुख का सुधा पान- दाती श्री

भौतिक विज्ञान के विविध क्षेत्रों में जैसे-जैसे प्रगति होती जा रही है वैसे-वैसे अधिकांश मनुष्यों के अंदर एक क्षुद्र अहम इस प्रकार फैलता जा रहा है कि उसकी चपेट में अनेकानेक मानवोचित गुण अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। आजकल एक फैशन ही चल गया है कि भगवान और भगवान की अस्मिता को मानने वाले सिद्धांतों की खिल्ली उड़ायी जाये। किंतु ऐसा करने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि मनुष्य की बुद्धि चाहे जितनी भी प्रखर हो गयी हो किंतु ऐसी विलक्षण बुद्धि से युक्त मनुष्य नामक प्राणी को बनाने वाली वह सर्वोच्च सत्ता निश्चय ही उससे ऊपर है। अतः उसकी अस्मिता को नकारना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता।

इस संसार में तरह-तरह के लोग रहते हैं। कुछ लोगों की मानसिकता अपने शरीर और निकट संबंधियों के हित साधन के दायरे में कैद रहती है तो कुछ लोगों को मनुष्य क्या, समस्त प्राणियों के हित साधन की चेष्टा करने में ही सुख-सुकून प्राप्त होता है। वे अपने निजी सुख-दुख की जरा भी परवाह न कर दूसरों की भलाई में अनवरत लगे रहते हैं। कुछ मनस्वी तो ग्राम, प्रांत व देश की सीमाओं से भी बहुत आगे निकल जाते हैं और उनके लिए पूरा विश्व ही एक परिवार बन जाता है। अधिकतर साधु-संत व फकीर ऐसे ही उदारमना होते हैं। सच पूछिए तो सच्चे साधु-संतों की सोच सामान्य लोगों से सर्वथा भिन्न होती है। वे गुरु-परंपरा से प्राप्त ज्ञान के आलोक में साधना कर इस सच्चाई को पूरी तरह आत्मसात कर चुके होते हैं कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाने के लिए सतत् सचेष्ट रहना है। उन्हें अपने ही अंतरतम में समस्त चराचर विश्व नजर आने लगता है। अतः अपने-पराये की भावना उन्हें छू भी नहीं पाती। वे उस सर्वोच्च सत्ता से व्यावहारिक रूप से इस प्रकार जुड़ चुके होते हैं कि उन्हें सबके साथ एकात्मता की अनुभूति होने लगती है। उनके स्वांतः सुखाय का दायरा इतना फैल चुका होता है कि उसमें सबके सुख की कामना बड़ी आसानी से समा जाती है।

ऐसे साधु-संतों व भगवद् भक्तों के बाहरी खान-पान व आचार आदि में भिन्नता भले नजर आये किंतु वे भीतर से एक ही जैसे होते हैं। वे अपनी अस्मिता को पूरी तरह भगवान की भक्ति में समर्पित कर चुके होते हैं और उस आनंद को अनेक तरीकों से व्यक्त करते हुए दूसरे लोगों को भी प्रभु की भक्ति करने की प्रेरणा देने के लिए भगवान का गुणानुवाद करने लगते हैं। वे साधु-संत व भक्तजन प्रभु के पावन नाम का सुमिरण व जाप करके अपने मानव तन को सार्थक बनाया करते हैं। जब भक्तजन भगवान का गुणानुवाद करने में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि वे अपनी स्वतंत्र अस्मिता को भी भुला बैठते हैं तब जाकर वे भीतर बाहर हर तरफ से परमात्मा में विलीन होने की प्रक्रिया में अग्रसर होते हैं। उसी क्रम में जब भक्ति मार्ग में अग्रसर भक्त पर प्रभु की विशेष अनुकंपा होती है तब वे भगवान के नाम-सुमिरण की विधा में पारंगत होने के लिए सचेष्ट होने लगते हैं। क्योंकि प्रभु की महिमा का गान करते रहने से मनुष्य के अंदर सबके प्रति सौहार्द्रता व अपनत्व की भावना बड़ी तेजी से विकसित होने लगती है। वसुधैव कुटुंबकम् की उत्कृष्ट भावना उसके अंदर कुलांचे मारने लगती है। उसके अंतर्तम में स्वतः गुरुकृपा से प्राप्त प्रभु के नाम, मंत्र व स्वरूप के निरंतर सुमिरण-भजन की प्रवृत्ति उभरने लगती है और वह प्रवृत्ति ही माता के समान उसके सारे क्लेशों को दूर कर उसे निश्चिंत बना देती है। उसे इस बात का स्पष्ट आभास होने लगता है कि इस चराचर जगत में जो भी जड़-चेतन प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है तथा जो किसी भी युक्ति से दिखायी नहीं दे रहा है, उसे भी सही रूप में तभी देखा जा सकता है जब गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से मनुष्य का विवेक जाग्रत हो उठता है। संतों ने भगवान की भक्ति में भजन-सुमिरण की महिमा को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया गया है कि प्रभु नाम सुमिरण की साधना करने वाला व्यक्ति वेदों के गूढ़ातिगूढ़ रहस्यों को भी उजागर करने में सफल हो जाता है।

गुरु से प्राप्त दीक्षा मंत्र व नाम का सुमिरण करते हुए जब भक्त गुरु आज्ञा के अनुकूल आचरण करने लगता है तब स्वाभाविक रूप से उसके अंदर वैसे अद्भुत गुण जाग्रत होने लगते हैं जो अन्य लोगों में नहीं पाये जाते। जब भक्त प्रभु के नाम सुमिरण में पूरी तरह लवलीन हो जाता है तब वह खुद भी वह मंत्र ही बनकर रह जाता है, वह वही नाम बन जाता है जिसे वह जप रहा होता है। दूसरे शब्दों में भजन-साधना में पूरी तरह एकाग्र होने पर जीव के अंदर का अहम पूरी तरह नष्ट हो जाता है, अथवा वह इतना विराट हो जाता है कि उसी में सारा ब्रह्माण्ड ही सिमट जाता है और तभी वह विशिष्ट मंत्र या नाम सिद्ध हुआ माना जाता है।

प्राचीन धर्मग्रंथों में इस बात को अनेक ढंग से समझाया गया है। स्वच्छंद तंत्र के अनुसार वही मंत्र सफल है जिसको जपने वाला अविनाशी परमात्मा स्वरूप सद्गुरु से मिल चुका हो अर्थात जिसे अपने गुरुत्व का ज्ञान हो चुका हो। मंत्र को इस प्रकार जपना चाहिए, मंत्र में इस प्रकार तल्लीन होना चाहिए मानो जाप करने वाला खुद ही मंत्र बन गया हो। उसके अंदर ऐसा भाव नहीं रहे कि जाप करने वाले व्यक्ति से मंत्र कोई अलग वस्तु है। जब ऐसा होता है तभी मंत्र को आत्मसात किया जाना या आत्मरूप बनाया जाना संभव हो पाता है।

इसीलिए मैं सबसे कहता हूं कि यदि अपने जीवन में शाश्वत सुख-शांति की सुधा का स्वाद लेना चाहते हैं तो आप भी अपने-पराये के संकुचित दायरे से मुक्त हो सारे विश्व को अपना परिवार बनाने के लिए, विश्व के समस्त प्राणियों से एकात्मता स्थापित करने के लिए साधु-संतों के उस भावभूमि पर पहुंचने का प्रयास करें ताकि आपका भी स्वांतः सुखाय सबके सुख की कामना से एक रस हो जाये। किंतु याद रहे, साधु-संतों व भक्तों के उस भावभूमि पर पहुंचने के लिए आवश्यक है कि आप भी उन्हीं की तरह सनातन गुरु परंपरा से प्राप्त युक्ति का अवलंबन ले सत्य का अपने ही अंतरतम में साक्षात्कार कर उससे जुड़े रहने की अनवरत चेष्टा करते रहें। देर न करें, आज और अभी से सत्य के साक्षात्कार के मार्ग पर अग्रसर होने का दृढ़ संकल्प लें और अपने जीवन में उस शाश्वत सुख की सुधा को प्रवाहित होने का परिवेश सृजित करें।

यदि अपने जीवन में शाश्वत सुख-शांति की सुधा का स्वाद लेना चाहते हैं तो आप भी अपने-पराये के संकुचित दायरे से मुक्त हो सारे विश्व को अपना परिवार बनाने के लिए, विश्व के समस्त प्राणियों से एकात्मता स्थापित करने के लिए साधु-संतों के उस भावभूमि पर पहुंचने का प्रयास करें ताकि आपका भी स्वांतः सुखाय सबके सुख की कामना से एक रस हो जाये। किंतु याद रहे, साधु-संतों व भक्तों के उस भावभूमि पर पहुंचने के लिए आवश्यक है कि आप भी उन्हीं की तरह सनातन गुरु परंपरा से प्राप्त युक्ति का अवलंबन ले सत्य का अपने ही अंतरतम में साक्षात्कार कर उससे जुड़े रहने की अनवरत चेष्टा करते रहें।